चार्ल्स प्रथम और गृहयुद्ध

स्नातक प्रथम वर्ष

द्वितीय पत्र

ई कंटेंट

डा0 राजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक
इतिहास विभाग
लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ0 राजीव कुमार

पृष्ठभूमि

- इंगलैंड में गृहयुद्ध 1642 से 1649 ई. तक चला। इसे प्यूरिटन क्रांति के नाम से भी जाना जाता है।
- गृहयुद्ध राजा और संसद के बीच हुआ था। यह एक धार्मिक एवम राजनीतिक संघर्ष था।
- मूल प्रश्न संप्रभु शक्ति का था। संप्रभुता राजा के हाथ में रहे या राजा और संसद के हाथों में संयुक्त रुप से रहे।
- राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक मुद्दे पर राजा और संसद के बीच मतभेद था।

गृहयुद्ध के कारण

- राजा अपने विशेषाधिकार को लेकर विशेष रुप से सतर्क रहा करता था। वह अपने अधिकारों में किसी तरह के कटौति का पक्षधर नहीं था। जबकि संसद राजा के सीमित अधिकारों का हिमायती थी।
- ब्रिटेन में किसी भी तरह के करारोपण के लिए संसद की स्वीकृति अनिवार्य थी। परंतु राजा संसद की उपेक्षा कर

डॉ० राजीव कुमार

स्वेच्छा से कर अधिरोपित कर देता था। संसद ऐसे नाजायज करों का विरोध करने के लिए कृतसंकल्पित थी।

- राजा की सहानुभूति कैथोलिकों के प्रति थी जबकि संसद में प्यूरिटन की प्रधानता थी। संसद बिशप के विरोधी थे जबकि बिशप राजा के समर्थक माने जाते थे। बिशप को लाड्र्स सभा और प्रिवि कौंसिल से बाहर करने के उद्देश्य से कॉमन्स सभा ने बिशपों के बहिष्कार के लिए (Bishop Excusion Bill) पारित किया परंतु लॉड्र्स सभा ने इसे खारिज कर दिया।
- इससे नाराज कॉमन्स सभा के सदस्यों ने रुट एंड ब्रांच नामक बिल पेश किया। इसका उद्देश्य अंग्रेजी चर्च से बिशप को हटाना और चर्च का प्रबंध जनता द्वारा नियुक्त कमीशन को देना था। यह बिल भी खारिज हो गया। इसका असर यह हुआ कि संसद की एकता भंग हो गई।

डॉ० राजीव कुमार

- चार्ल्स जिद्दी, भीरु और अदूरदर्शी था। वह संसद की शर्तों को किसी भी स्थिति में नहीं मानने को तैयार था।
- चार्ल्स का 11 वर्षों का अनियंत्रित शासन भी संसद को खटक रही थी। संसद को हमेशा यह आशंका बनी रहती थी कि राजा कहीं फिर से इसकी पुनरावृति ना कर दे।
- इस 11 वर्षों के शासन काल के दौरान उसके दो सलाहकारों 1. धार्मिक मामलों में विलियम लॉर्ड तथा 2. असैनिक मामलों में वेंटवर्थ, को जनता दोषी मानती थी।
- विलियम लॉर्ड कैथोलिकों से सहानुभूति रखता था। वह मौका मिलते हीं कोर्ट ऑफ स्टार चेम्बर तथा कोर्ट ऑफ हाई कमीशन के माध्यम से कैथोलिको को प्रताडित करने लगा।
- इसी प्रकार वेंटवर्थ की नीति से संसद और जनता नाराज हो गई।

डॉ० राजीव कुमार

- स्कॉटलैण्ड की धार्मिक समस्या के समाधान के लिए चार्ल्स वहाँ गया था। वहाँ उसने एक गुप्त समझौता किया। उसके वहाँ से लौटते हीं प्रेस्बिटेरियन चर्च के अनुयायी सताये जाने लगे। इससे इंगलैण्ड की जनता में संदेह उत्पन्न हुआ।
- आयरलैण्ड में कैथोलिक लोग प्रोटेस्टेंटों की हत्या करने लगे। ऐसी धारणा बनी की इस घटना के पीछे राजा की सहमति थी।
- राजद्रोह के आरोपी 5 संसद सदस्यों को गिरफ्तार करने के लिए चार्ल्स 400 सैनिकों के साथ संसद भवन पहुँच गया। संसद के सदस्यों में इस घटना से खलबली मच गई। यद्यपि कामन्स सभा के अध्यक्ष ने उन सदस्यों के बारे में कोई सूचना नहीं दी। इस वजह से उन सदस्यों की गिरफ्तारी नहीं हो सकी।

डॉ० राजीव कुमार

- राजा के इन कारनामों से तंग आकर संसद ने एक महान विरोध पत्र सदन में प्रस्तुत किया। इसमें राजा के अनैतिक कार्यों की सूची बनाई गई। साथ हीं शासन और चर्च में सुधार का प्रस्ताव रखा गया। जोरदार बहस के बाद यह बिल खारिज हो गया।
- आसन्न युद्ध को देखते हुए कॉमन्स सभा ने मिलिशिया बिल(Militia Bill) सदन में पेश किया। इसमें यह कहा गया कि राष्ट्रीय सेना पर संसद का नियंत्रण होना चाहिए ना कि राजा का। राजा ने इस प्रस्ताव को खारिज कर दिया।
- 19 निवेदनों (19 Propositions) की एक सूची सदन में प्रस्तुत किया गया। इस प्रस्ताव में कार्यकारिणी, न्याय व्यवस्था, चर्च और सेना पर संसद के नियंत्रण की बात कही गई जिसे राजा ने अस्वीकृत कर दिया।

उक्त परिस्थितियों ने गृहयुद्ध को अवश्यंभावी बना दिया।

डॉ० राजीव कुमार